'समुदाय' : समस्तीपुर का शिक्षा शिविर

यह शिविर 'समुदाय' के आंगन में जहां उसका केंद्र है आयोजित किया गया। केले के बाग में कनात और पंडाल तानकर हाल बनाए गए।
एक हाल में ट्रेनिंग कक्षाएं और चर्चा की बैठकें हुईं। भाग लेने वालों की संख्या 117 थी, 18 पुरुष और 99 स्त्रियां जो 17 समुदायों से आए थे।
हर समुदाय में एक-दो व्यक्ति अपने-अपने क्षेत्र में स्वास्थ्य कार्यक्रम संगठित करने योग्य थे।

बातचीत के विषय थे—

1. गांव में होने वाले सामान्य रोग।
2. मां और बच्चे की देखभाल और इलाज।
3. दांतों की देखभाल—बीमारियां, कारण और रोकथाम।
4. आंखों में होने वाले सामान्य रोग—उनके कारण, देखभाल और इलाज।
5. कुष्ठ रोग—रोग के लक्षण और इलाज।
6. तपेदिक—रोग के लक्षण और इलाज।
7. स्वास्थ्य-सेवा की राजनीति।
8. मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण।
9. स्वास्थ्य कार्य के जरिये स्त्रियों को संगठित करना।
10. 'समुदाय' के चार्टों का अनपढ़ हरिजन औरतों को समझाने के लिए इस्तेमाल।
11. स्त्रियों के रोग और उनका सामाजिक रीति-रिवाजों से संबंध।
12. स्त्रियों से संबंधित समस्याएं।
13. स्त्रियों को संगठित करते समय उठने वाली बाधाएं।
14. शिविर की समाप्ति के बाद की रपट।
15. व्यावहारिक जीवन में प्रार्थना और नैतिकता का महत्व।

इनमें से कुछ मुद्दों पर समय की कमी के कारण विचार नहीं किया जा सका, पर खास बात यह थी कि भाग लेने वाले खुले ढंग से अपनी बात कह रहे थे और अपने-अपने क्षेत्र में इस तरह के कार्यक्रम अपनाने को तैयार थे। विषयों को समझाने के लिए चार्ट, पोस्टर और माडलों का उपयोग किया गया। स्लाइड भी दिखाई गईं। वीडियो कैसेट से स्वास्थ्य-संबंधी विषय समझाए गए।
स्वास्थ्य कार्यकर्ती अशिक्षित थीं, पर वे अपने अर्जित ज्ञान को अच्छे ढंग से समझा रही थीं। वे शिविर में प्रेरणा का स्रोत रहीं।

डाक्टर शैलजा देशपांडे, डाक्टर अरुंधती भावे और डाक्टर एस. वी. शास्त्री ने शिविर में भाग लेने वालों के लिए दो घंटे का विशेष क्लीनिक चलाया।

शाम का समय खेलों के लिए था। हालांकि इन बहनों ने पहले कभी खेल-कूद में भाग नहीं लिया था, पर आश्चर्यजनक योग्यता और क्षमता दिखाई। बड़ी उम्र की औरतों ने भी बहुत रुचि ली। चार बच्चों की एक मां ने 'खो-खो' खेलने में इतनी फुर्ती दिखाई कि सबका ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ। खेलों का व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है।

शिविर का उद्देश्य

स्त्रियों को स्वास्थ्य कार्यकर्ती की ट्रेनिंग

विभिन्न संगठनों द्वारा स्वास्थ्य कार्यक्रमों को अपने कार्यक्रम में शामिल करना।

समुदाय के स्वास्थ्य कार्यक्रम का मूल्यांकन। किसी सीमा तक इसे और बढ़ाया जाए और नये दृष्टिकोण शामिल किए जाएं।

श्री शुभ मूर्ति ने बताया कि यह बात सर्वमान्य है कि रोगों की रोकथाम इलाज से अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए स्वास्थ्य कार्यकर्ता की भूमिका डाक्टर से अधिक महत्वपूर्ण है। यहां यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि स्वास्थ्य कार्यकर्ता की कुशलता से ज्यादा उसका संवेदनशील होना जरूरी है। उसे अपनी जानकारी पर भरोसा होने के साथ अपनी सीमाओं के बारे में भी जागरूक रहना चाहिए। यदि वह अपनी सीमाओं को ध्यान में नहीं

रखेगी तो अनेक डाक्टरों की तरह वह गलत सलाह देकर नुकसान भी पहुंचा सकती है।

शिविर में भाग लेने वालों ने बच्चों की देखभाल और औरतों के शरीर और उसमें होने वाली बीमारियों में खास रुचि दिखाई। आंखों से ज्यादा दांतों की देखभाल में रुचि दिखाई।

कुष्ठ रोग में काफी रुचि दिखाई दी। डाक्टर एस. वी. शास्त्री का कहना था कि यह सामाजिक बीमारी है और समाज को जागरूक बनाने से इसे खत्म किया जा सकता है।

पर्यावरण की चर्चा नया विषय था और उसमें विशेष रुचि दिखाई दी। प्रकृति और अन्य प्राणियों की एक दूसरे पर निर्भरता मिसालें देकर समझाई गईं। मिसालें उनके जीवन से संबंधित थीं। जिस कारण विषय आसान होने के अलावा रुचिपूर्ण बन गया।

शिविर सुचारु रूप से चले, इसके लिए ज़िम्मेदारियां बांटी गईं। कुछ का काम शिविरार्थियों को जगाना था जिसे वे सीटी बजाकर या गाना गाकर करती थीं। एक पुरुष सहभागी को बच्चों की देखभाल का जिम्मा सौंपा गया। यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि वह न केवल यह काम बहुत अच्छे ढंग से कर रहा था, बल्कि खूब रुचि के साथ भी कर रहा था। बच्चों को दूध देना, दवा देना, उन्हें बहलाना, उनके साथ खेलना आदि उसके काम थे। जिम्मेदारियों के बारे में फैसले सामूहिक रूप से किए गए थे।

शिविर की गतिविधियों से सब संतुष्ट थे तथा उसे आगे चलाने के लिए तैयार थे। खुला स्त्री समाज— कल्पना और प्रतिभा अश्तिकार की बातें काफी रुचिपूर्ण थीं। दोनों महाराष्ट्र की थीं। उन्होंने बताया कि औरतों की समस्याएं एक सी हैं, हालांकि उनके जीवन में काफी अंतर है। महाराष्ट्र में स्त्री समाज काफी खुला है। यह बदलाव बहुत सामाजिक कोशिशों से आया है। बिहार में भी यह बदलाव लाया जा सकता है।

हर दिन शाम को दिन भर के कार्यक्रम का मूल्यांकन किया जाता था। शिविर की गतिविधियों की आलोचना, समस्याएं और उनके समाधान पर चर्चा की जाती थी। स्त्रियों ने इन सबमें बड़े खुले ढंग से भाग लिया। जिन समूहों ने ठीक ढंग से स्वास्थ्य कार्यक्रम को समझ लिया था समुदाय की ओर से उन्हें दवाओं का एक किट भेंट किया गया। शिविर आयोजकों ने इस बात के लिए विशेष खुशी जाहिर की कि बिना पढ़ी-लिखी स्त्रियां भी स्वास्थ्य कार्यकर्ती का काम कर सकती हैं और पिछड़े इलाकों में भी कार्यक्रम को कारगर बनाया जा सकता है। □